

बस में चुदास के हिचकोले

“मेरी प्यारी बहनिया, बनेगी दुल्हनिया, बन के आएंगे
दूल्हे राजा, भईया राजा बजाएंगे बाजा, भईया राजा
बजाएंगे बाजा ! मेरे प्यारे भाइयो एवम उनकी
चुदक्कड़ लुगाईयो.. आप सभी को इस नाचीज...

”
[Continue Reading] ...

Story By: (sameer.samyal)

Posted: Tuesday, April 7th, 2015

Categories: भाई बहन

Online version: बस में चुदास के हिचकोले

बस में चुदास के हिचकोले

मेरी प्यारी बहनिया, बनेगी दुल्हनिया, बन के आएंगे दूल्हे राजा,
भईया राजा बजाएंगे बाजा, भईया राजा बजाएंगे बाजा !

मेरे प्यारे भाइयो एवम उनकी चुदक्कड़ लुगाईयो.. आप सभी को इस नाचीज शैम के खड़े लन्ड का ठोक कर सलाम ।

मैं बहुत सोच-विचार करने के बाद अपनी ये पहली सच्ची कहानी आपके सामने पेश कर रहा हूँ ।

अब आप ही इसकी सत्यता या असत्यता की परख करें ।

मैं कहानी शुरू करने से पहले अपने बारे में कुछ बातें बता दूँ कि मेरा नाम समीर उर्फ़ शैम है और मैं कलकत्ता का रहने वाला हूँ । वैसे हमारे रिश्तेदार दूर-दूर तक फैले हुए हैं ।

शायद उनमें से कोई एक आप के भी शहर में हो.. खैर.. उससे मुझे क्या ?

ये बात है पिछले साल फरवरी की.. मेरी बुआ जो बिहार के एक छोटे से शहर डुमराव में रहती हैं.. उनके एकलौते बेटे शादी तय हुई.. जो लगभग मेरे ही उम्र का है । चूँकि मेरे पापा जी, जो अक्सर अस्वस्थ रहते हैं, उन्होंने मुझसे इस शादी में सम्मिलित होने की बात कही ।

अब बुआ के घर शादी थी इसलिए मुझे उस शादी में शरीक होने की खास हिदायत दी गई थी ।

सो मैंने भी जाने की तैयारी कर ली.. पर अचानक ही मेरी माता जी को भी रांची में मामा के यहाँ से बुलावा आ गया.. जो हाल ही में गया से नाना-नानी का पिण्डदान करने के बाद भोज की तैयारी कर रहे थे।

फिर क्या था.. मैंने अपने होने वाले इस सफर में जो जरा सा परिवर्तन क्या किया.. कि आज वो एक कहानी बन गई।

हुआ यूँ कि अब मैंने मम्मी को पहले रांची छोड़ने के बाद बुआ के यहाँ जाना तय कर लिया और रांची पहुँच भी गया।

पर वो कहते हैं कि नियति जो एक बार खेल रच देती है.. उसे विधाता भी नहीं बदलता है।

मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही होने वाला था जो मेरी सोच के साथ एक रिश्ते को भी कालिख लगा गया.. जिसे मैं आज तक अपने वीर्य की सफेदी से उजला करने की कोशिश में लगा हूँ।

मेरे मामा की लड़की सुदीप्ती.. जिसे सब प्यार से चालू कहते हैं.. उसने भी मेरे साथ चलने की ऐलान कर दिया.. जिसकी जिद के आगे किसी की भी नहीं चली।

चालू रांची की बी.सी.ए. की छात्रा थी जिसकी छरहरी काया एवं अक्षत यौवन का बयान शब्दों से तो कोई कवि ही कर सकता है.. मुझमें इतनी सामर्थ कहाँ..

इसलिए अब मैं इस कहानी की इस नायिका के साथ सीधे कहानी पर आता हूँ।

चूँकि मुझे वहाँ से आगे का सफर भी करना था इसीलिए जल्द ही नहा धो कर दूसरा लोअर व टी-शर्ट डाल लिया.. ताकि सफर आरामदायक हो।

फिर मैं चालू को लेकर रांची बस अड्डे पहुँच गया.. जहाँ से रात्रि सेवा की बस बक्सर वाया

पटना.. डुमराव जाती है.. पर हाय रे बिडम्बना.. उस बस में जो कि समय से निकलने वाली थी.. उसमें सिर्फ एक ही द्विशायिका शयन स्थली खाली थी।

मैंने वही शायिका ले ली.. ताकि आराम से सोते हुए पहुँच जाऊँ और थकान भी न हो..

मैंने चालू को ऊपर पहले लिटा दिया.. और अभी खुद भी लेटा ही था कि बस ने रेंगना शुरू कर दिया।

खलाशी की आवाज के साथ चालक ने भी बस की आवाज को मिला दिया.. पीपी.. पूंपूं .. भईया जी दाएं.. बाबू बाएं.. का शोर अभी खत्म हुआ ही था कि चालक महोदय ने बिहार के मशहूर गायक खेसारी लाल यादव का वीडियो एलबम अपनी पूरी आवाज में चालू कर दिया।

जिसके बोल थे- सईयां डोली मुदले रहनी पीयरी माटी से.. देवरा मुअना खोदे काठी से....

मैंने भी उस एसी वीडियो कोच का पूरा किराया वसूलने के लिए अपनी गरदन को परदे से बाहर निकाला ही था कि मुझे चालू मेरी पीठ से चिपकती सी लगी।

मैंने पूछा- क्या हुआ चालू ?

चालू- मुझे भी देखना है.. पर दिख नहीं रहा है।

मैं- आ.. फिर इधर आजा..

वो मेरे ऊपर से होते हुए आगे आ गई।

अब मैं उसके पीछे चिपका सा उसके सर के ऊपर से देखने लगा।

मेरा बायाँ हाथ उसके सर के नीचे तथा दायाँ हाथ उसके बगल से होते हुए सीने के आगे लगे बस की छड़ को थामे हुए था।

बस अपनी पूरी गति से लहराते हुए चली जा रही थी और हम हौले-हौले हिचकोले खा रहे थे।

हर हिचकोले पर इधर मैं उसकी पीठ से लगता और वो आगे को लचक जाती.. जिससे उसकी चूचियाँ मेरे दायें हाथ की कलाई को चूम लेतीं।

कामदेव का बाण चल चुका था.. जिसका असर मुझ पर छाने लगा और मैं कामान्ध होने लगा।

मैं भूल चुका था उस चालू को.. जो मेरी बहन थी। मुझे तो बस वो ऐसी सुन्दर सुकन्या लग रही थी.. जिसे भोग कर मैं धन्य हो जाना चाहता था। पर शर्म.. डर के रूप में अभी भी मुझमें पर्याप्त थी।

फिर भी मैं धीरे-धीरे उससे चिपकता गया और अपनी कलाई का दबाव भी उसकी चूचियों पर बढ़ा दिया।

अब हर हिचकोले पर मेरे शेर लन्ड.. जो अब तक रगड़ खा-खा कर मोटा होकर पूरा फौलाद बन गया था.. वो उसकी जाँघों में स्कर्ट के ऊपर रगड़ लगा रहा था और इधर मेरी कलाई उसकी चूचियों पर रगड़ लगा रही थी।

अचानक उसने हरकत की और मेरी तरफ करवट बदली.. मैं भी हड़बड़ा कर पीछे को सरक सा गया और भरे गले से थूक सटकते हुए पूछा- क्या हुआ.. ?

चालू- बस मुझे नहीं देखना..।

मैं समझ गया कि इसे मेरी गुस्ताखियों का अहसास हो गया है.. शायद मैंने कुछ ज्यादा ही दबाव दे दिया था।

मैं- तो तू पीछे आजा.. मुझे तो देखना है।

चालू- नहीं.. मैं यही ठीक हूँ.. आप देखो और हाँ.. परदे पूरे लगा कर देखो.. बस अपने देखने भर ही खोलो.. क्योंकि मुझे नींद आ रही है।

मैं विस्मित रह गया और सोचने लगा।

चालू- क्या हुआ ?

मैं- कुछ नहीं।

मैं तुरन्त परदे लगा कर बाहर देखने लगा। गाना बदल चुका था.. स्थिति भी और शायद मेरा लहजा भी.. अब नजर कहीं थी.. तो दिमाग कहीं.. चालू ज्यों की त्यों मुझसे चिपकी हुई थी।

फर्क इतना था कि पहले उसका पीठ मुझसे लगी थी.. पर अब उसकी छोटे किन्तु सख्त यौवन कलश मेरे सीने को बीधे जा रहे थे और मेरे हाथ अभी भी उसके पीठ पर ही थे।

मेरे कानों में गीत तो सुनाई दे रहा था.. पर ऐसा लग रहा था जैसे वो आवाज बहुत दूर की हो।

‘सईयां लईका नियन सुत जाला कोरा में, दियां के अजोरा में ना..’

अचानक मेरा ध्यान जो अब तक चहुं ओर विचर रहा था... वो चालू की तरफ एकत्र हो गया। उसने हल्की सी हरकत जो की थी, उसने हौले से अपना बायाँ हाथ उठा कर मेरे कमर पर रख दिया था।

मैं इस बात को सामान्य रूप में लेता.. पर उसके हाथों में होने वाले कम्पन इस हरकत को साधारण नहीं बता रहे थे। मैंने भी वापस उसे परखने की ठान ली इसलिए परदा पूरी तरह लगा कर उसके समानान्तर लेट गया। मेरे हाथ अभी भी पहले वाले स्थिति में थे.. लेकिन मैंने अपना गला जरूर उसके होंठों से कुछ दूरी पर लगा दिया।

इसके साथ ही अपने दाहिने हाथ से जो अभी भी उसके पीठ पर थे.. उससे हल्के से सहला दिया।

फिर एक लम्बा इन्तजार.. जो छोटा ही रहा।

कुछ ही पलों में मुझे अहसास हुआ कि जैसे उसके लब लरजते हुए मेरे गले को चूम रहे हैं तथा उसके हाथ मेरी कमर से नीचे जाँघों की तरफ सरक से रहे हैं।

अब मुझे समझते देर नहीं लगी कि आग दोनों तरफ बराबर लगी है और अब देर करना सरासर बेवकूफी कहलाएगी।

मैंने हौले से उसके सीने को अपने सीने से दबाते हुए अपने होंठों को उसके गालों को छुआते हुए.. उसके कान के पास ले गया और पुकारा- चालू.. चालू..

कोई आवाज नहीं।

फिर मैंने अपने अंगूठे से उसके होंठों को सहलाते हुए दुबारा पुकारा- चालू.. सो गई क्या ?

चालू- हम्म... ना।

मैं- क्यों..

चालू- नींद नहीं आ रही।

इस बार चालू की आवाज कुछ ज्यादा ही कंपकंपाई सी थी।

मैं- क्यों ?

चालू- पता नहीं...

बस इतना कह कर उसने अपना चेहरा मेरे सीने से लगा दिया।

फिर क्या था... मैं समझ गया कि आग उधर भी लग चुकी है.. क्योंकि समझदार को इशारा जो मिल गया था।

अब मैंने बिना समय गंवाए उसको कसकर सीने से लगा लिया।

चालू की तरफ से भी जवाब तुरन्त मिला, उसने भी लहरा कर अपने हाथों से मेरी कमर को भींच लिया।

मैंने चालू को बेतहाशा चूमने लगा.. चालू की तरफ से भी मेरे हर प्यार का जवाब मिल रहा था।

मैं उसकी टी-शर्ट को ऊपर उठा कर उसके मम्मों को सहलाने लगा तो चालू भी मेरी टी-शर्ट के अन्दर हाथ डाल कर मेरे निप्पल को सहलाने लगी।

चालू की ये अदा मुझे बहुत ही प्यारी लगी.. सो मैंने जोश में आकर उसके मम्मों को जोर से मसल दिया।

ऊफ़फ़...

चालू ने भी तुरन्त जवाब में मेरे निप्पल पर चिकोटी काटी।

मैं धीरे से फुसफुसाया- अरे साली.. क्या कर रही है..

चालू- वही.. जो आप कर रहे हैं..

मैं उसके इस जवाब पर निहाल हो गया और उसके होंठों को अपने होंठों से कैद कर लिया। उस पल ऐसा लग रहा था जैसे संसार भर के फूलों का पराग.. शहद बन कर चालू के ही अधरों से टपकने लगा हो।

चालू भी मदहोश सी आँखें बन्द किए.. मेरी बाँहों में मचल रही थी और अपने पैरों से मेरे पैरों को सहला रही थी। मैं भी अपने बाएं हाथ से उसकी चूचियाँ दबाता.. सहलाता... मसलता रहा और दाहिने हाथ को नीचे लाते हुए उसकी स्कर्ट को सरका दिया।

फिर उसकी जाँघों के बीच की संधि स्थल को छुआ, जिसे बुर.. चूत.. फुद्दी.. पिक्की.. बुर... इत्यादि कई और नामों से भी जाना जाता है। मैं उसकी बुर को उसकी कच्छी के ऊपर से ही गुदगुदाने लगा।

चालू ने भी बिना समय गंवाए मेरे पायजामे के अन्दर हाथ डालकर मेरे लन्ड को पकड़ लिया और बड़े ही खिलाड़ी अन्दाज से हिलाने लगी।

मैंने चालू की कच्छी को भी सरका दिया फिर उसकी चूत के अन्दर ऊँगली डालनी चाही.. पर ये क्या इतनी कसी हुई बुर.. सुभानअल्लाह.. आज तो वाकयी मुझे जन्नत मिलने वाली है।

पर अगले ही क्षण मेरी सोच को झटका सा लगा... दोस्तों उस समय हम बस में जो थे और वीडियो भी बन्द हो गया था। अब उसकी हल्की सी भी चीख सबको चौकन्ना कर सकती थी।

अब मैंने अपने शक का निवारण करना ज्यादा जरूरी समझा इसलिए चालू से पूछा- चालू क्या तुमने पहले भी कभी किया है ?

शुरू- क्या.. ये.. छी.. आपने ऐसा कैसे सोच लिया ?

मैं- अरे नहीं.. तुम गलत समझ रही हो। बाबू इस समय हम बस में जो हैं।

मैंने उसे प्यार से पूरी बात समझाई।

चालू- नहीं.. कभी नहीं किया।

मैं सोच में पड़ गया।

चालू- क्या हुआ.. ?

मैं- कुछ नहीं पर हम यहा ज्यादा कुछ नहीं कर सकते हैं

चालू- नहीं ऐसा मत करो.. प्लीज..

मैं- घबड़ा मत मेरी जान.. अभी तो हमारे पास 4-5 दिन का समय है.. और रही अभी की बात तो अभी तुझे ओरल सेक्स से ही पूरी मस्ती दूंगा..।

चालू चहकते हुए- सच्ची..

मैं- हाँ जानेमन.. बिलकुल सच्ची.. पर एक बात तो बता.. जब तूने पहले कुछ किया नहीं.. तो फिर ऐसी मस्त अदा कहाँ से सीखी ?

चालू- हाय क्या बेवकूफी भरा सवाल है भइया.. ये सारा मोबाइल का कमाल है और आप ही सोचो कि आज ऐसा कौन है.. जिसके मोबाइल में ब्लू-फिल्म न हो ?

मैं- वाह साली.. क्या बात कही.. कसम से तूने दिल खुश कर दिया.. तू मुझे पहले क्यों नहीं मिली..

चालू- भईया.. पहली बात तो मैं आपकी साली नहीं हूँ और दूसरी हर चीज का एक वक्त होता है.. जो इत्तफाक से आज आ गया।

मैं- अरे मेरी जान.. मेरी बाबू.. ये तो मैंने प्यार से कह दिया.. वैसे भी अब तू मेरी साली नहीं.. मेरी रानी बन गई है.. मेरी लाड़ो।

फिर मैंने उसकी फुट्टी को अपनी पूरी मुट्ठी में कस कर भींच लिया।

चालू- आह.. धीरे.. फिर मैं भी आपको प्यार से ही बोलती हूँ.. बहनचोद.. जो आप बनने वाले हो.. मुझे अपनी रानी बनाकर चोद दो और कर दो मेरे चुदने का सपना पूरा..।

अब उसने ये कहते हुए भरी मुट्ठी से मेरे लन्ड को ऐसे मरोड़ा जैसे वो ककड़ी हो।

मैं- उह.. क्यों नहीं मेरी छम्मक छल्लो.. अभी ले मेरी मुख-चोदन कला.. पूरे पानी की नदी न निकाल दूँ तो फिर कहना बहन की लौड़ी।

मैं अपना मुँह उसके बुर पर लगाते हुए अपने होंठों से उसके भूरे रेशमी बालों को उसकी बुर से हटाते हुए उसकी चूत को चाटना व चूसना शुरू कर दिया।

चालू ने भी अब तक जो मेरा एक भी वार खाली नहीं जाने दिया था.. सो भला ये खाली कैसे जाता।

उसने तुरन्त बदला लिया और मेरे लन्ड को 'गप्प' से अपने मुँह में ले लिया और चूसने लगी।

मैं जब रह-रह कर उसकी पिक्की पर दंतचोट करता.. तो जबाब में वो भी तुरन्त मेरे लन्ड पर काट लेती ।

हम दोनों एक-दूसरे को मात देने के लिए जवाब पर जवाब देने में लगे हुए थे । कोई हारने को तैयार नहीं था.. साथ ही सुमधुर गप-गप.. चप-चप.. की हल्की आवाज हमें उत्साहित किए जा रही थी ।

तभी अचानक वो कांपते हुए अकड़ने लगी और मेरे लन्ड को छोड़कर मेरे घुटनों को अपने मम्मों से कसकर हल्की सी सिसकारी लेने लगी ।

मेरा मुँह उसके नमकीन रस से सराबोर हो गया ।

चालू- बस... हाय मैं गई.. अब रहने दो ।

मैंने उसके कूल्हों को सहलाते हुए उसकी गाण्ड में ऊँगली करते हुए कहा- रुक.. अभी मेरी नहीं हुआ है.. मेरे लन्ड को अपनी चूत के अमृत से स्नान तो कर लेने दे ।

मैं सीधा हो कर उसके बहते यौवन रस को अपने लन्ड पर मसलते हुए अपने लन्ड उसकी नाभि (डोली) में लगा दिया । फिर सुरसुराहट के साथ हल्की सी पिचकारी के साथ असीम आनन्द और पलकें भारी होती चली गई ।

चालू हल्के परन्तु सुरीली आवाज में गुनगुना रही थी ।

हाय रे डोली मुदने रहली पीयरी माँटी से.. भईया हमर खोदे खांटी से..

मैं शांत हो.. इस सोच में डूबता गया कि आने वाले अगले 4-5 दिन को कैसे अपने मन मुताबिक बनाऊँगा ।

दोस्तों, इस अधूरी कहानी के लिए मैं माफी चाहता हूँ.. पर आप लोगों के विचार जानने के बाद ही मैं इस कहानी का अगला भाग पेश करूँगा।

तब तक के लिए अलविदा। आप सबके प्यारे से मेल के इन्तजार में आपका अपने चहेता-
समीर

